ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 7 | कुल पृष्ठ-8 | 7 से 13 सितम्बर, 2017 | दयानन्दाब्द 193 | सृष्टि सम्वत् 1960853118 | सम्वत् 2074 | आ कृ.-02

महान कर्मयोगी स्व. आचार्य धर्मजित जिज्ञासु को समर्पित

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान एवं द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम न्यूयार्क के आतिथ्य में आयोजित

27वाँ आर्य महासम्मेलन न्यूयार्क में समारोह पूर्वक सम्पन्न

ओ३म् ध्वज शोभायात्रा का हुआ भव्य आयोजन

ओ३म्ध्वज शोभायात्रा की अगुवाई करते हुए बायें से स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, डॉ. देवबाला रामनाथन जी, श्री विश्रुत आर्य जी, स्वामी विश्वंङ्ग जी, श्री रणवीर कुमार, श्री चन्द्रभान आर्य जी एवं श्री भुवनेश खोसला जी आदि

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान एवं द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम न्यूयार्क के आतिथ्य में आयोजित 27वाँ आर्य महासम्मेलन 27 से 30 जुलाई, 2017 तक न्यूयार्क में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन अमेरिका में आर्य समाज की अग्नि को प्रज्ज्वलित करने वाले स्व. आचार्य धर्मजित जिज्ञासु की स्मृति में आयोजित किया गया था। सम्मेलन की सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम न्यूयार्क एवं इसकी निदेशक आचार्य पं. धर्मजित जिज्ञासु की सुयोग्य सुपुत्री डॉ. देवबाला रामनाथन ने अपने कंधों पर लिया हुआ था। उन्होंने न्यूयार्क क्षेत्र की समस्त आर्य समाजों एवं प्रमुख आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से आर्य महासम्मेलन एवं ओ३म् ध्वज शोभा यात्रा की शानदार व्यवस्था करके समस्त आर्यजनों की मुक्तकंठ से प्रशंसा प्राप्त की। आर्य महासम्मेलन का संक्षिप्त विवरण आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री विश्रुत आर्य द्वारा प्रेषित निम्न प्रकार है :–

अमेरिका में आर्य समाज के वर्तमान कर्णधार डॉ. देवबाला रामनाथन जी, श्री विश्रुत आर्य जी व श्री भुवनेश खोसला जी

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का 27वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 27 से 30 जुलाई, 2017 तक बड़े ही हर्षोल्लास से न्यूयॉर्क अमेरिका में संपन्न हुआ। सम्मेलन में देश विदेश के लगभग २५ संन्यासियों, विद्वानों एवं वक्ताओं ने भाग लिया और आगंतुकों/भक्तों का मार्गदर्शन किया। इनमें मुख्य रूप से सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती , आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, साध्वी उत्तमा यति, स्वामी विष्वङ्ग जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य दर्शनानन्द जी, श्री विनय जी आर्य, श्री विट्ठल राव जी, डॉ देवबाला रामनाथन, डॉ सोमदेव जी शास्त्री, डॉ. हरीश चंद्र, डॉ बलवीर आचार्य जी, आचार्य वेदश्रमी जी, आचार्य हरि प्रसाद जी, पंडित धर्मपाल जी शास्त्री, डॉ. अमरजीत जी शास्त्री, डॉ. सुधीर आनंद, डॉ. रमेश गुप्ता, डॉ. भूपेंद्र गुप्ता एवं श्री विद्यासागर गर्ग जी के प्रेरणादायक उद्‌बोधन हुए।

विचार TV International के (Executive director, श्री धर्मेश जी आर्य भी विशेष रूप से पधारे। महासम्मेलन में श्री जगदीश शर्मा (Executive Editor, Bhaskar Media Group, India) परिवार सहित विशेष रूप से पधारे थे। सम्मेलन में उनका भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कनाडा से, आर्य समाज के प्रमुख स्तम्भ, श्री अमर एरी जी भी सभा के विशेष आग्रह पर पधारे।

वैदिक धर्म में नारी शक्ति के विशेष स्थान को प्रतिपादित करने हेतु, पहली बार, यह महासम्मेलन, दो महिला नेत्रियों – डॉ ज्योति गाँधी एवं डॉ. देवबाला रामनाथन के मुख्य संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

इस वर्ष का महासम्मेलन, द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम और न्यूयॉर्क की अन्य आर्य समाजों के सहयोग से, अमेरिका में आर्य समाज के मुख्य संस्थापकों में से एक, प्रखर वक्ता, आर्य समाज के प्रचारक, ओजस्वी वाणी के धनी, स्व. श्री पंडित धर्मजीत जी जिज्ञासु की स्मृति में आयोजित किया गया। महासम्मेलन में श्री जिज्ञासु जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गयी।

महासम्मेलन का मुख्य विषय था 'वैदिक धर्म और संस्कृति'। चार दिवसीय यह महासम्मेलन, कुल 9 सत्रों में विभाजित था। प्रत्येक सत्र किसी न किसी विषय पर आधारित था। सभी विषय अमेरिका के परिवेश के अनुसार, वैदिक सिद्धांतों को प्रतिपादित करने की दृष्टि से निश्चित किये गए थे। यह प्रयास किया गया कि विषयों में वैदिक संस्कृति और धर्म का प्रत्येक आयाम प्रकट किया जाए। चाहे वह भौतिक स्वरुप हो, सामाजिक या आध्यात्मिक। आत्मा की यात्रा, सृष्टि की उत्पत्ति, त्रैतवाद, श्रद्धा का वैदिक स्वरुप, आर्ष/अनार्ष अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अमेरिका में आर्य समाज के संस्थापक, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य धर्मजित जिज्ञासु को विनम्र श्रद्धांजलि

– स्वामी आर्यवेश

अमेरिका में आर्य समाज के संस्थापक स्तम्भ, अद्भुत प्रतिभा के धनी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद् एवं महान समाजसेवी आचार्य धर्मजित जिज्ञासु की जन्मशती के अवसर पर सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से शत्–शत् नमन। आचार्य जिज्ञासु जी का जन्म सन् 1915 में मथुरा जिले के एक छोटे से गाँव सोनई में हुआ था। बचपन से ही उन्हें योग एवं धर्म की शिक्षा उनके पिता जी से प्राप्त हुई जिसे उन्होंने जीवनभर अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाकर रखा। अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं अथक परिश्रम के बल पर उन्होंने एम.ए., एल.एल.बी. तथा सी.जी.ए. की डिग्रियाँ प्राप्त कर ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से इकोनॉमिक्स में एम.ए. किया। शिक्षा पूरी करने के पश्चात् वे मैनेजमेंट एवं इकोनॉमिक्स के प्रोफेसर बने। किन्तु कुछ समय सर्विस करने के बाद उन्होंने त्यागपत्र दे दिया तथा अपना स्वतन्त्र व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया। अपने चेन्नई प्रवास के दौरान वे सक्रिय रूप से आर्य समाज से जुड़ गये तथा चेन्नई आर्य समाज के मंत्री के रूप में वर्षों कार्य किया। अपनी निष्ठा, कर्मठता एवं मिशनरी भावना के कारण वे सार्वदेशिक सभा द्वारा विदेशों में वैदिक धर्म प्रचार के प्रभारी भी बनाये गये। जिसके आधार पर वेद प्रचार के लिए उन्होंने विदेशों के दौरे भी किये और सन् 1975 में वे स्थाई रूप से अमेरिका आ गये। अमेरिका में उन्होंने अपने घर पर ही आर्य समाज लगाना प्रारम्भ किया तथा धीरे–धीरे आर्य समाज को विधिवत रूप से गठित करके आर्य समाज 'हिल साइड एवेन्यु' की स्थापना की। इस आर्य समाज के निर्माण के लिए उन्होंने दिन–रात एक करके धन एकत्रित किया और अमेरिका में आर्य समाज का अध्याय शुरू किया। वे अमेरिका में आर्य समाज के जन्मदाता थे। उन्होंने अपने प्रयत्न से यहाँ तीन आर्य समाजों की स्थापना की।

व्यक्तिगत रूप से उनका जीवन अत्यन्त प्रेरणादायक था। तप, त्याग एवं समर्पण की वे साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। रात्रि को 8 बजे सोना तथा प्रातः 3 बजे उठना उनकी नियमित दिनचर्या थी। प्रतिदिन ध्यान,

साधना व ईश्वरभक्ति के द्वारा आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करके उसे जनसेवा एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में प्रयोग करते थे। आर्य समाज के प्रचार के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। उन्हें विभिन्न संस्थाओं, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता था। उनकी आवाज इतनी बुलन्द थी कि उन्हें कभी भी लाउडस्पीकर की आवश्यकता नहीं पड़ी। उनकी विद्वता एवं प्रभावशाली वक्तृत्त्व कला के कारण उन्हें विश्व प्रसिद्ध हारवर्ड विश्वविद्यालय तथा टेक्सास स्थित आस्टिन शहर में द्वितीय विश्व धर्म संसद में विश्व के गिने–चुने विद्वानों में आमंत्रित किया गया था। जहाँ पर उन्होंने वेदों पर प्रभावशाली व्याख्यान देकर अपने तेजस्वी व्यक्तित्व का परिचय दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान में तथा द्रोपदी जिज्ञासु आश्रम के आतिथ्य में स्व. आचार्य धर्मजित जिज्ञासु की जन्मशती के अवसर पर न्यूयार्क में आर्य महासम्मेलन का आयोजन निःसंदेह उन्हें स्मरण करने का स्वर्णिम अवसर है। अपने पूर्वजों एवं महापुरुषों को स्मरण करना और उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना हम सभी का दायित्व बनता है। यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी के जीवन एवं कार्यों की धरोहर की एक मजबूत संवाहक बनकर उनकी सुयोग्य सुपुत्री विश्वविख्यात विदुषी, जुझारू नेत्री आदरणीया बहन डॉ. देवबाला जी एवं उनका पूरा परिवार इस महासम्मेलन की सफलता के लिए दिन–रात मेहनत कर रहे हैं। इसी तरह आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के वर्तमान प्रधान श्री विश्रुत आर्य एवं महामंत्री श्री भुवनेश खोसला के नेतृत्व में सभा के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भी मनोयोग से इस महासम्मेलन की सफलता के लिए कृत–संकल्पित हैं तथा बधाई के पात्र हैं। उन्होंने 27वें आर्य महासम्मेलन को आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी की स्मृति में आयोजित करने का निर्णय लेकर प्रशंसनीय कार्य किया है। आचार्य जिज्ञासु जी का जीवन सदैव युवाओं को प्रेरणा देता रहेगा। उनकी जन्मशताब्दी पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

वैदिक धर्म प्रचार का सशक्त केन्द्र द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम, न्यूयार्क, अमेरिका

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् स्वतन्त्रता सेनानी एवं अमेरिका में आर्य समाज की स्थापना करने वाले स्व. आचार्य धर्मजित जिज्ञासु जी की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती द्रौपदी जिज्ञासु की स्मृति में स्थापित 'द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम' न्यूयार्क अमेरिका में वैदिक धर्म प्रचार का एक सशक्त केन्द्र है। इस आश्रम के संचालन का दायित्व श्रद्धेय स्व. धर्मजित जिज्ञासु की सुयोग्य सुपुत्री विश्वविख्यात विदुषी, प्रखर वक्ता डॉ. देवबाला रामनाथन के कंधो पर है। डॉ. देवबाला का व्यक्तित्व समाज के विभिन्न समुदायों एवं वर्गों में विख्यात है। उन्हें विभिन्न महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि की हैसियत से आमंत्रित करके संस्थाओं के लोग गौरवान्वित अनुभव करते हैं। डॉ. देवबाला जी ने अपने सभी भाई–बहनों के सहयोग एवं सहमति से 'द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम' को वैदिक धर्म प्रचार के एक सशक्त केन्द्र के रूप में विकसित किया हुआ है। देश–विदेश से और विशेषकर भारत से जाने वाले सभी विद्वान्, संन्यासी एवं प्रचारक इस आश्रम में जाकर लोगों को अपने विचारों से लाभान्वित करते रहते हैं। आश्रम की गतिविधियों से सभी वर्गों के लोग प्रभावित हैं तथा उसके साथ जुड़े हुए हैं। आश्रम की संचालिका डॉ. देवबाला जी ने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से आग्रह किया है कि वे आश्रम के माध्यम से प्रतिवर्ष विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर कार्यक्रम आयोजित करने में तथा समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर व्यापक समर्थन जुटाने में उनका सहयोग करें। स्वामी आर्यवेश जी ने उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन देकर उत्साहित किया है। आश्रम के साथ विशेष रूप से आर्य समाज के अनेक प्रतिष्ठित लोग जुड़े हुए हैं जिनमें मुख्य रूप से डॉ. यशपाल आर्य, श्री जितेन्द्र अभी, श्री सतीश आर्य, श्री रणवीर कुमार, डॉ. स्नेह बाला, डॉ. धर्मजित नरेन्द्र कुमार आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान एवं द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम न्यूयार्क के आतिथ्य में आयोजित

ग्रंथों की परिभाषा, योग, आध्यात्मिक जीवन शैली और इसको अपनाने के उपाय इत्यादि अनेकों महत्त्वपूर्ण विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार रखे और चर्चाएं भी हुईं। सम्मेलन के दिनों में, प्रातः काल नियमित योग एवं ध्यान के सत्र रखे गए और शुक्रवार और शनिवार को प्रातः यज्ञ का भी आयोजन किया गया, जिनमें से एक दिन तो युवाओं ने यज्ञ का नेतृत्व किया।

पहला सत्र, (27 जुलाई वीरवार) परिचय सत्र था जिसमें सभा के संस्थापक एवं ट्रस्टी, आर्य पथिक वानप्रस्थ श्री गिरीश खोसला जी और सभा महामंत्री श्री भुवनेश खोसला जी ने सभी आगंतुकों का परिचय कराया। तत्पश्चात भोजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ।

शुक्रवार को दूसरा सत्र ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ। संन्यासियों विद्वानों ने ध्वजारोहण किया और सभा प्रधान श्री विश्रुत आर्य ने ध्वज गीत गायन का नेतृत्व किया। तत्पश्चात दिन के तीन सत्रों में विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन हुये। प्रवचनों के मध्य में सुमधुर वैदिक भजनों से वातावरण आध्यात्मिक बना रहा। पहले दिन का मुख्य आकर्षण था युवाओं का सत्र – जो युवाओं द्वारा ही संचालित किया गया। लगभग १५–२० युवाओं ने इस सत्र में अपने विचार रखे,जो कि वैदिक मूल्यों, वैदिक ज्ञान और उसको प्रसारित करने के तरीकों पर आधारित थे।

रात्रि कालीन सत्र में युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया, इसमें जहां एक ओर बच्चों ने भजन गीत इत्यादि गाये वहीं दूसरी और छोटे छोटे बच्चों ने वैदिक मन्त्रों के पाठ से सभी का मन मोह लिया।

शनिवार प्रातःकालीन सत्र में स्व. श्री पंडित धर्मजीत जी जिज्ञासु को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी और उनके कर्तृत्वों को याद किया गया। जयपुर से पधारे श्री जगदीश शर्मा जी ने 'जीवन जीने के विज्ञान' विषय पर बहुत ही व्यावहारिक मार्गदर्शन किया।

मध्यान्ह के सत्र में, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की वार्षिक रिपोर्ट एवं आगे की योजनाओं पर प्रकाश डाला गया। इस सत्र का संचालन सभा प्रधान श्री विश्रुत आर्य, महामंत्री श्री भुवनेश खोसला और श्री जग महादेव ने किया। श्री भुवनेश खोसला जी ने लोगों से सभा के कार्यो से जुड़ने और सहयोग देने का आह्वान किया। भुवनेश जी ने आने वाले वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा देते हुए सभा के जन सामान्य से जुड़ने के, युवाओं में वैदिक विचारों के आधार के उपायों पर चर्चा की।

शनिवार को दो विशिष्ट पुस्तकों का भी विमोचन किया गया – 'वेद प्रार्थना' जो कि डॉ सुधीर आनंद द्वारा सम्पादित है और 'बेसिक्स ऑफ़ हिन्दू धर्म' जो कि डॉ दीनबन्धु चन्दोरा द्वारा लिखित/सम्पादित है। दोनों ही लेखक वैदिक धर्म के प्रति सर्वात्मना समर्पित, श्रद्धेय महानुभाव हैं, जिनका पश्चिमी सभ्यता के लिए आर्य समाज की विचारधारा को प्रकाशित करने में अनथक योगदान है।

रात्रि कालीन सत्र में सभी विद्वानों/संन्यासियों,

कार्यकर्त्ताओ का सोल्लास सम्मान किया गया। सभा का अगला महासम्मेलन अटलान्टा (जॉर्जिया) प्रांत में करने की भी घोषणा हुयी। अटलान्टा से आये हुए प्रतिनिधि मंडल ने, सभी से 2018 में अटलान्टा आने का आह्वान भी किया।

सम्मेलन में युवाओं के लिए अलग सत्र थे जिनका आयोजन श्रीमती अमिता गुप्ता के मार्गदर्शन में किया गया। युवाओं के लिए विशेष लगभग 8 विशेष प्रवचन हुए जिनके विषय युवाओं को वैदिक धर्म से ओत–प्रोत करने के उद्देश्य से निर्धारित किये गए थे। युवाओं में आपसी सौहार्द्र एवं टीम भावना बढ़ाने हेतु उन्हें कुछ समय के लिए बाहर भ्रमण (picnic) के लिए भी भेजा गया, जिसका उन्होंने भरपूर आनंद उठाया।

अंतिम दिन का आकर्षण थी शोभायात्रा जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में, द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम के संयोजकत्व में पहली बार आयोजित की गयी। वैदिक धर्म, आर्य समाज, महर्षि दयानन्द एवं राष्ट्रभक्ति के गीत गाते चलते हुए प्रतिभागियों का उत्साह देखते ही बनता था। इस अवसर पर प्रमुख रूप से स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, आचार्य सोमदेव शास्त्री अध्यक्ष, वैदिक मिशन मुम्बई, आचार्य बलवीर जी, डॉ. धर्मपाल, डॉ. अमरजीत शास्त्री, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, स्वामी विष्वङ्ग आदि ने शोभायात्रा का नेतृत्व किया। सबसे आगे संन्यासियों /विद्वानों की मण्डली थी जिनके साथ साथ डॉ देवबाला रामनाथन, सभा प्रधान श्री विश्रुत आर्य एवं सभा महामंत्री श्री भुवनेश खोसला, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय जी आर्य, जयघोष करते, गीत गाते, ध्वज उठाये चल रहे थे। उनके बाद न्यू यॉर्क क्षेत्र की और अमेरिका की विभिन्न आर्य समाजों के आगंतुक सदस्य अपनी अपनी समाज का बैनर और ध्वज उठाये सोत्साह, स्वरों में स्वर मिलाते चल रहे थे। सभी का उत्साह अकल्पनीय था जो कि शब्दों में वर्णित किया ही नहीं जा सकता। कइयों ने तो आर्य समाज का ऐसा आयोजन पहली बार ही देखा था। शोभायात्रा के अंत में, आर्य पथिक वानप्रस्थ श्री गिरीश खोसला जी के नेतृत्व में, आर्य समाज के वयोवृद्ध सेनानियों की टोली जो कि एक विशेष वाहन पर विराजमान थी, उत्साह पूर्वक, गीत गाती हुयी, नारे लगाती हुयी, जय घोष करती हुयी चली आती थी।

शोभायात्रा ने न्यू यॉर्क फ्लशिंग के क्षेत्र में आर्य समाज की दुंदुभि बजा दी। शोभायात्रा का स्थानीय मंदिरों, गुरुद्वारों द्वारा विशेष स्वागत किया गया और व्यापक भारतीय समुदाय के लोगों ने इसमें भाग लिया। न्यू यॉर्क/फ्लशिंग मेयर कार्यालय के प्रतिनिधि विशेष अतिथि के रूप में पधारे। डॉ नीता जैन और वाणिज्य दूतावास के अधिकारी श्री नय्यर की भी विशेष उपस्थिति रही। शोभायात्रा एवं सम्मेलन, आर्य समाज के लक्ष्यों की पूर्ति एवं वैदिक धर्म के द्वारा मानव मात्र के कल्याण के अनथक प्रयासों को करने के दृढ संकल्पों के साथ अतीव सौहार्द्र पूर्ण, उल्लसित वातावरण में, शांतिपाठ और जयघोष के साथ समाप्त हुआ।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा अमेरिका के विभिन्न नगरों में स्थित आर्य समाजों में प्रचार कार्यक्रम

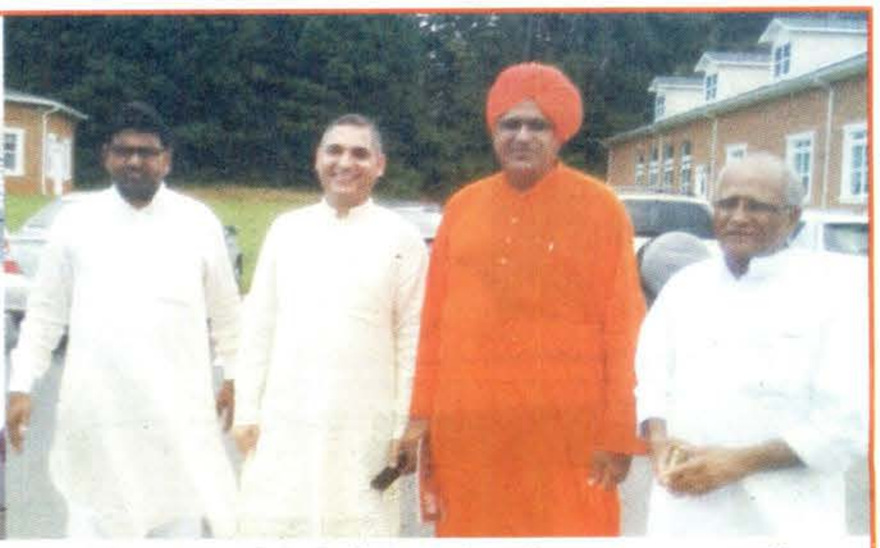

बायें से दायें पं. के.एन. गिरी, स्वामी आर्यवेश, श्री बिरजानन्द एडवोकेट, प्रो. विट्ठलराव आर्य। दूसरे फोटो में श्री बिरजानन्द एडवोकेट, श्री विश्रुत आर्य, स्वामी आर्यवेश, प्रो. विट्ठलराव आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी आर्य महासम्मेलन अमेरिका में भाग लेने के लिए 18 जुलाई, 2017 को न्यूयार्क पहुँचे थे। उनके साथ सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी भी अमेरिका गये थे। अपने अमेरिका प्रवास के दौरान स्वामी जी एवं उनके साथियों ने अमेरिका के विभिन्न नगरों में स्थित आर्य समाजों का दौरा किया तथा वहाँ के आर्यजनों से मिलकर आर्य समाजों की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। स्वामी जी तथा उनके साथियों ने 21 से 25 जुलाई तक अटलांटा में तीन–चार कार्यक्रमों में भाग लिया। आर्य समाज के विद्वान श्री के.एन. गिरी के निमंत्रण पर अटलांटा में स्वामी जी ने पं. गिरी के सुपुत्र के ग्रेजुएशन समारोह की शोभा बढ़ाकर जहाँ उनके सुपुत्र को आशीर्वाद दिया वहीं अपने सारगर्भित प्रवचन से उपस्थित श्रोताओं को भी वेदज्ञान से तृप्त किया। पं. गिरी के साथ उनके विशेष सहयोगी पं. भूपेन्द्र त्रिपाठी जी का भी उक्त कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा और उनका कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली एवं सफल था। विशेष संख्या में श्रोता कार्यक्रम में सम्मिलित थे। रविवार को ग्रेटर अटलांटा वैदिक टेम्पल में स्वामी जी का व्याख्यान आयोजित किया गया जिसका संयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री विश्रुत आर्य ने बड़े पुरुषार्थ एवं कुशलता के साथ किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व डॉ. दीनबन्धु चंदोरा, डॉ. सुधीर शर्मा एवं अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। व्याख्यान से पहले विशेष यज्ञ को आर्य समाज के धर्माचार्य आचार्य वेदश्रमी जी ने सम्पन्न कराया। ग्रेटर अटलांटा वैदिक टेम्पल के अतिरिक्त आर्य समाज अलाबामा एवं श्री विश्रुत आर्य तथा श्री आशु चौधरी के निवास पर भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अटलांटा के अतिरिक्त आर्य समाज हिल साइड एवेन्यु, न्यूयार्क, आर्य समाज वेस्ट चैसर, द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम न्यूयार्क, आर्य स्प्रुच्युअल सेन्टर न्यूयार्क, आर्य समाज शिकागो, सेन्ट लुईस, अलबनी, न्यू जर्सी आदि स्थानों पर भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के लिए आने–जाने एवं पहुँचाने की व्यवस्था में आर्य समाज हिल साइड एवेन्यु के उपप्रधान श्री चन्द्रभान आर्य जी एवं धर्माचार्य डॉ. अमरजीत शास्त्री जी का विशेष सहयोग रहा। वहीं इन कार्यक्रमों में विभिन्न सहयोगियों ने विशेष पुरुषार्थ करके सहयोग प्रदान

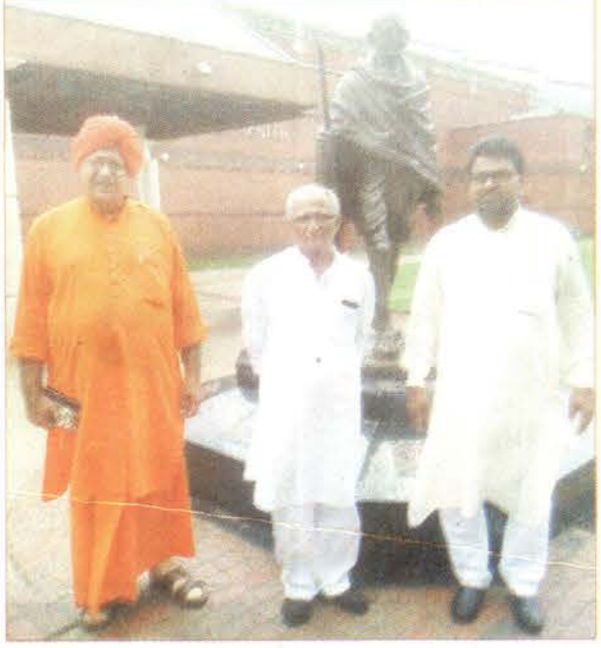

किया। मुख्य रूप से डॉ. देवबाला रामनाथन, डॉ. स्नेहबाला, डॉ. नरेन्द्र कुमार, श्री जितेन्द्र अब्बी, श्री राजभल्ला, श्रीमती गीता गुप्ता, डॉ. रमेश गुप्ता एवं श्रीमती अमिता गुप्ता, डॉ. देवकेतु, डॉ. जगवीर बेनीवाल, श्री सतीश आर्य, श्री रणवीर कुमार, श्रीमती लीला वर्मा, सुश्री विजयलक्ष्मी अरोड़ा, श्री सुशील माड़िया, प्रो. रवि कुलकर्णी, श्री भरतभाई शाह, श्रीमती संगीता यादव, श्री उमेश अरोड़ा, श्री मन्नू सहारन, श्री संदीप सिंह, श्री गुरिन्दर सिंह बिट्टा, श्री लवलीन कोडा एवं श्री सुमित कोडा, श्री विवेक मलिक एवं विशाल मलिक तथा सुमित्रा मलिक, डॉ. राजेन्द्र दहिया, श्री सुरेश पाल सिंह, डॉ. सुखदेव चन्द सोनी, आचार्य हरि प्रसाद, आचार्य दर्शनानन्द, डॉ. विजय आर्य, डॉ. यशपाल आर्य आदि महानुभावों से स्वामी जी एवं उनके साथियों ने मिलकर आर्य समाज की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी दी। अमेरिका में आर्य समाज की गतिविधियों को तीव्र गति प्रदान करने तथा युवा पीढ़ी में वैदिक संस्कृति का बीजारोपण करने के लिए विशेष विचार–विमर्श किया गया। सभी आर्यजनों ने इसमें अपनी विशेष रुचि प्रकट की।

इस वर्ष की अमेरिका यात्रा के लिए स्वामी आर्यवेश जी ने डॉ. देवबाला जी को श्रेय देते हुए कहा कि यदि बहन देवबाला जी का विशेष आग्रह न होता तो सम्भवतः हम अपनी व्यस्तताओं के कारण अमेरिका न जाते, किन्तु उन्होंने अपने पूज्य पिताश्री आचार्य धर्मजित जिज्ञासु की स्मृति में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलन में अपनी विशेष भूमिका के कारण मुझे आने के लिए विशेष रूप से प्रेरित किया और इसीलिए इस सम्मेलन में सम्मिलित होकर सभी आर्यजनों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अमेरिका में निःसंदेह आर्य प्रतिनिधि सभा का नेतृत्व तेजस्वी युवाओं के हाथ में है। श्री विश्रुत आर्य व श्री भुवनेश खोसला क्रमशः प्रधान एवं मंत्री के पद पर सुशोभित हैं और इन दोनों ही नवयुवकों का व्यक्तित्व तेजस्वी, प्रतिभावान एवं कार्य करने की ऊर्जा से भरपूर है। अतः आशा की जा सकती है कि भविष्य में और अधिक युवा वर्ग आर्य समाज में दीक्षित होगा। अपने अमेरिका प्रवास के दौरान यद्यपि सभी आर्यजनों का स्नेह एवं भरपूर सहयोग हमें मिला, सभा के अधिकारियों ने हमें विशेष सम्मान दिया किन्तु द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम एवं इसकी संचालिका बहन डॉ. देवबाला, डॉ. स्नेह बाला (बीबा), डॉ. धर्मजित नरेन्द्र कुमार, डॉ. प्रदीप आदि ने जो सहयोग एवं स्नेह दिया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसी तरह आर्य समाज हिलसाइड एवेन्यू के प्रधान श्री सतीश आर्य, मंत्री श्री रणवीर कुमार, उपप्रधान श्री चन्द्रभान आर्य एवं बहन लक्ष्मी आर्या, डॉ. अमरजीत शास्त्री तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती धीरज आर्या आदि का धन्यवाद करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ और उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि उन्होंने जिस आत्मीयता और स्नेह के साथ आतिथ्य एवं सहयोग दिया वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा। न्यूयार्क के ही प्रतिष्ठित कार्यकर्ता श्री जितेन्द्र अभी, श्रीमती सती गुरदयाल, पं. भरत जी एवं आर्य समाज न्यूयार्क के समस्त पदाधिकारियों व सदस्यों का मैं विशेषा आभार व्यक्त करता हूँ।

वैदिक टेम्पल अटलांटा में यज्ञवेदी पर स्वामी आर्यवेश, आचार्य वेदश्रमी एवं प्रो. विट्ठलराव आर्य

डॉ. रमेश गुप्ता के निवास पर आर्य संन्यासियों एवं विद्वानों का ग्रुप फोटो

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के 27वें आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के 27वें आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

आर्य महासम्मेलन न्यूयार्क, अमेरिका 2017 में स्वामी आर्यवेश जी द्वारा दिया गया ऐतिहासिक भाषण

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति क्यों और कैसे?

आर्य महासम्मेलन में अमेरिका के कोने–कोने से पधारे आर्य भाई एवं बहनों, श्रद्धेय संन्यासी वृन्द, विद्वतवृन्द एवं सभा के समस्त पदाधिकारीगण, वेद के एक मंत्र के माध्यम से मैं अपने विचार आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।।
(ऋ. ५/६०/५)

अब से 192 वर्ष पहले भारत माता की कोख से जन्मे एक महामानव ने ऋग्वेद के इस आदर्श के अनुरूप समाज व्यवस्था का एक सपना देखा था। इसके अनुसार कोई बड़ा नहीं होगा, कोई छोटा नहीं होगा, सब भाई की तरह होंगे। जिनका पिता परमात्मा और माता प्रकृति होगी। इस आदर्श को सामने रखकर उस महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज की सड़ी–गली व्यवस्था के विरुद्ध बगावत की एक आंधी खड़ी कर दी थी और सारी दुनिया के विचारशील लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया था कि आर्य समाज के नाम से भारत में एक आग सुलग रही है। यही वजह थी कि अमेरिका में बैठे तत्कालीन प्रसिद्ध दार्शनिक एंड्रू जेक्सन डेविस ने कहा था कि मुझे पूर्व की दिशा में एक आग दिखाई पड़ती है जो दयानन्द जी के दिल में सुलग रही है और आर्य समाज की भट्टी में धधक रही है। "अग्नि ना अग्निः समिध्यते" अग्नि से अग्नि प्रज्ज्वलित होती है। इस सिद्धान्त के अनुरूप महर्षि दयानन्द के हृदय में सुलगी आग के साथ भी यही हुआ और स्वामी श्रद्धानन्द, शहीद लेखराम, लाला लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण वर्मा, राम प्रसाद बिस्मिल एवं भगत सिंह आदि अनेक जवानियाँ जलती हुई मशालें बन उठीं और आज इस पवित्र ऋषि वेदी पर हमें यह कहते हुए गर्व है कि बलिदान, वीरता, संकल्पशीलता, परिश्रम, लगन व त्याग की आर्य परम्परा का गौरवशाली इतिहास हमारे पीछे है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य समाज की प्रारम्भिक आधी शताब्दी का इतिहास जितना देदीप्यमान रहा अन्तिम अर्द्धशताब्दी का उतना नहीं रहा। हमने आन्दोलन और सृजन का ऋषि प्रदत्त कार्यक्रम विस्मृत करके आर्य समाज की महान नैतिक शक्ति को संस्थाओं के फेर में झोंक दिया। परिणामस्वरूप आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है – अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" गौण हो गया तथा संस्थाओं का जंजाल मुख्य बन गया और आर्य समाज आम आदमी से दूर होता चला गया।

दुनिया के इतिहास का यह विचित्र संयोग है कि विश्व के दो महापुरुष समकक्ष पैदा हुए, कार्यक्षेत्र में उतरे और इस दुनिया से एक साथ दोनों का अवसान हुआ। यह दो महापुरुष थे महर्षि दयानन्द सरस्वती और कार्लमार्क्स। हम सब जानते हैं कि आज दुनिया की एक तिहाई आबादी कार्लमार्क्स के चिन्तन पर आधारित राजनैतिक दलों द्वारा शासित हैं। कार्लमार्क्स के अनुयायियों ने उस विचारधारा को फैलाने के लिए संगठित एवं व्यवस्थित प्रयास किया। किन्तु दूसरी तरफ आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज की शोषणमूलक व्यवस्था के बदलाव और विकल्प की जो रूपरेखा हमें दी थी, हम उनके अनुयायी उस विचारधारा को विश्व में प्रचारित–प्रसारित करने एवं क्रियान्वित करने की दिशा में कोई बहुत संतोषजनक प्रगति नहीं कर सके। यद्यपि यह सत्य है कि पिछली शताब्दी में सामाजिक अन्याय, महिला उत्पीड़न तथा धार्मिक पाखण्ड आदि कुरीतियों के विरुद्ध जितना कार्य आर्य समाज ने किया है उतना किसी भी राजनैतिक, गैर राजनीतिक या धार्मिक संगठन ने नहीं किया। यहाँ किसी को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि मार्क्स का दर्शन शुद्ध भौतिकवादी व एकांगी दर्शन है। जिसके पास व्यक्ति के आन्तरिक बदलाव का कोई कार्यक्रम नहीं है जबकि हमारे मार्गद्रष्टा महर्षि दयानन्द दुनिया के वह एक मात्र महामानव थे जिन्होंने व्यक्ति के बाहरी व भीतरी बदलाव का सर्वांगीण कार्यक्रम हमें दिया।

आर्य समाज का उद्देश्य – आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी ने जो मुख्य उद्देश्य स्पष्ट किया वह था संसार का उपकार करना। किसी आर्य समाजी या किसी हिन्दू या किसी भारतीय का उपकार करना नहीं बल्कि अफ्रीका के घने जंगलों, अरब के रेगिस्तानों, अमेरिका की चमचमाती नगरियों या जहाँ भी मानव का अस्तित्व है उसका उपकार करना। कोई दीवार इस उपकार के कार्य में नहीं रखी और आर्य समाज के इसी नियम में संसार के उपकार शब्द की व्याख्या करते हुए लिख दिया "शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" यह क्रम भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। जीवात्मा अमर है किन्तु मनुष्य का मनुष्य होना उसके शरीर पर अवलम्बित है। शरीर की उन्नति के बिना, उसके रख–रखाव के बिना, उसकी अनिवार्य जरूरतों को पूरा किये बिना मनुष्य का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। अतः इस बात पर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है कि "शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।" अर्थात् शरीर धर्म के पालन एवं उपकार के लिए प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण साधन है। अतः उसकी उन्नति अत्यन्त आवश्यक है। महर्षि ने दूसरा कार्यक्रम सुझाया आत्मिक उन्नति करना। शरीर संसार में उपकार का एक साधन मात्र है। किन्तु शरीर के साथ–साथ उसके जीवात्मा की उन्नति एवं पवित्रता भी जरूरी है। आत्मिक उन्नति का कार्यक्रम भी महर्षि ने इसीलिए रखा ताकि मनुष्य अपने भीतर से भी सत्य के प्रति आग्रह, परमात्मा के प्रति आस्था तथा प्राणीमात्र के प्रति सहृदयता अपने स्वभाव का हिस्सा बना सके। इसी प्रकार जब मनुष्य शारीरिक और आत्मिक रूप से स्वस्थ होगा तो सामाजिक उन्नति के लिए भी उसका क्रियाशील रहना आवश्यक है। क्योंकि शारीरिक और आत्मिक रूप से शक्तिशाली व्यक्ति अपनी सामाजिक उपादेयता के बिना निकम्मा और समाज पर बोझ ही बना रहेगा। इसलिए उसे सामाजिक विकास के काम में पूरी भागीदारी करनी पड़ेगी। आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य में निर्दिष्ट शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के इस मौलिक कार्यक्रम के पीछे भावना और तर्क यही है कि मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति के बिना उसके मनुष्य होने का कोई महत्त्व नहीं रह जायेगा। बल्कि मनुष्य होने की प्रासांगिकता इसी में निहित है कि प्रत्येक मनुष्य शारीरिक रूप से और आत्मिक रूप से मजबूत होकर समाज को उन्नति की ओर ले जा सके। प्रश्न पैदा होता है कि आर्य समाज के इस मुख्य उद्देश्य को

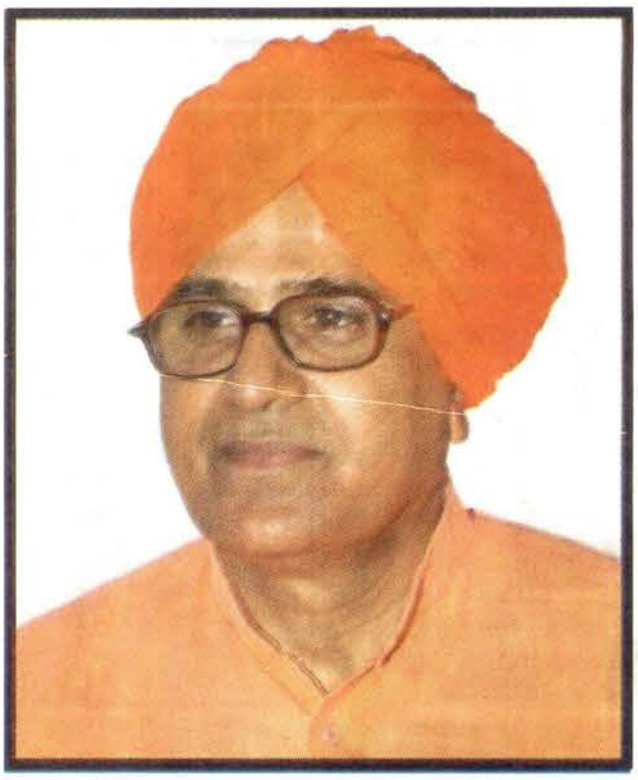

क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज या आर्य समाज के अनुयायी क्या करें?

1. शारीरिक उन्नति – जिस व्यक्ति के घर में कड़ी मेहनत के बाद पेटभर खाने को रोटी न हो, उसकी बहू–बेटियों एवं स्वयं को अपनी आबरू बचाने के लिए कपड़े न हों, सोने के लिए जिसके सिर के ऊपर मकान की छत न हो उसकी शारीरिक उन्नति की बात उसके लिए सबसे पहले रोटी, कपड़ा, मकान और दवाई उपलब्ध कराने से ही शुरू होगी। अतः यह आवश्यक है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक उन्नति के लिए उसकी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति कराना, उसके लिए वातावरण तैयार करना और एक मजबूत लोकशक्ति के रूप में आर्य समाज को संगठित करना हमारा मुख्य दायित्व होना चाहिए। हमारे पास अर्थात् आर्य समाज के पास ऐसा कोई विपुल स्रोत नहीं है जिसके माध्यम से दुनिया के जरूरतमंद लोगों को उनकी मौलिक आवश्यकताओं से निश्चिन्त किया जा सके। किन्तु हम एक लोकशक्ति का दबाव बनाकर साधन सम्पन्न शासन व्यवस्थाओं को प्रभावित कर सकते हैं और सामान्यजन की शारीरिक उन्नति के लिए उनका मानस तैयार कर सकते हैं। इसके लिए आर्य समाज को आगामी वर्षों में विश्वव्यापी अभियान चलाना चाहिए जिसके द्वारा शारीरिक उन्नति के लिए वांछित वर्गों की हम मदद कर सकें। पूरे विश्व में शारीरिक उन्नति से वंचित किसानों, श्रमिकों, बेरोजगारों, आर्थिक रूप से पीड़ित महिलाओं एवं वंचित वर्गों का आर्य समाज को इस अभियान में व्यापक समर्थन प्राप्त होगा और आर्य समाज आम जनता से जुड़ सकेगा।

2. आत्मिक उन्नति – जिस देश को आध्यात्मिकता का जनक कहा जाता हो, मंत्रदृष्टा ऋषियों को जिस धरती पर वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ हो, गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी, पतंजलि, व्यास एवं अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा आदि न जाने कितने महर्षियों की तपस्या से जो भूमि पवित्र रही हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस जगह अपना आत्म बलिदान किया हो वहाँ इतनी अनैतिकता, इतना अधर्म, इतना पाखण्ड, भोगवाद के प्रति इतना आकर्षण हर उस आदमी के पौरुष और ईमानदारी को चुनौती है जिसे भारतीय होने का गर्व अभी भी है। केवल भारत ही नहीं पूरे विश्व में राजनैतिक सफलता और अर्थोपार्जन के लिए झूठ, बेईमानी, मक्कारी आदि आवश्यक अंग बन गये हैं। पाखण्डियों की जय–जयकार हो रही है। सौ से अधिक ईश्वर अवतार अभी भी जिन्दा हैं। आर्य समाज के लिए यह एक जबरदस्त चुनौती है। क्योंकि हम यह महसूस करते हैं कि आध्यात्मिकता से दूर होते जाने के कारण ही समाज आज इस अधोगति तक पहुँचा है। आत्मिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि वेदाधारित त्रैतवाद के अनुरूप ईश्वर, जीव, प्रकृति की अवधारणाओं के आधार पर समाज की रचना हो। एतदर्थ पंचमहायज्ञों (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ और अतिथि यज्ञ) की व्यावहारिकता की वर्तमान संदर्भों में व्याख्या करते हुए जन–जन तक फैलाना, पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा सोलह संस्कारों को सरलीकृत ढंग से तथा वैज्ञानिकता के साथ व्यावहारिक बनाने की कोशिश करना ताकि व्यक्ति नैतिक मूल्यों के आत्मानुशासन में जी सके। पतंजलि वर्णित योग के अनुरूप अष्टांग योग का प्रचार–प्रसार कर व्यक्ति की आत्मिक उन्नति के लिए प्रयत्न करना। मनुष्य के जीवन में वेद वर्णित आश्रम व्यवस्था का विशेष महत्त्व है अतः प्रत्येक व्यक्ति को चार आश्रमों में दीक्षित करना, क्योंकि एक दीक्षित आश्रमी न केवल स्वयं की आत्मिक उन्नति करता है बल्कि अन्यों की भी आत्मिक उन्नति में सहायक बन सकता है। व्यक्ति को निकम्मा, डरपोक और कायर बनाने के लिए पौराणिक पाखण्डियों एवं वेद विरुद्ध मत सम्प्रदायों का एक मिलाजुला षड्यन्त्र चलता रहा है वह है भाग्यवाद। पैदा होने से लेकर मरने तक आदमी डरा–डरा सा रहता है और हर छोटी–बड़ी घटना के लिए ज्योतिषी, पुजारी, जन्मकुंडली तथा हस्तरेखाओं के फेर में पड़ा रहता है। भाग्यवाद का भय आत्मिक उन्नति में बाधक है। अतः भाग्यवाद से ऊपर कर्मवाद को महत्त्व देने के लिए लोगों को प्रेरित करना आवश्यक है। कितने आश्चर्य की बात है कि आर्य समाज की स्थापना के लगभग 142 वर्ष के बाद भी समाज में धार्मिक पाखण्डों, गुरुडम और अन्धविश्वासों की भरमार हो रही है। आदमी और ईश्वर के बीच दलाल के रूप में जो कथित गुरु और धर्माचार्य सामान्य जनता को बहकाते हैं उनके विरुद्ध आर्य समाज शास्त्रार्थों की परम्परा को पुनर्जीवित कर तमाम अवैदिक मत–मतान्तरों के असत्य का खण्डन पैनेपन के साथ करे तथा ईश्वर के अस्तित्व, उसके यथार्थ स्वरूप आदि विषयों पर चुने हुए वैदिक विद्वानों के व्याख्यान, जगह–जगह वैदिक गोष्ठियाँ कराये ताकि सच्ची आध्यात्मिकता का दर्शन हो सके।

3. सामाजिक उन्नति – जो लोग यह मानते हैं कि समाज की आर्थिक विषमता मिट जाने से सारी समस्याएँ हल हो जायेंगी अथवा यह मानते हैं कि ईश्वरवाद का प्रचार होने से सबकुछ सुधर जायेगा वे बड़ी भ्रांति में हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का यह मंत्र स्पष्ट करता है कि "अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते। ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायाॅंरताः।। – यजु. 12/40 इसका तात्पर्य है केवल भौतिकवाद भी अधूरा है तथा केवल अध्यात्मवाद भी अधूरा है। दोनों का समन्वय होना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी सिद्धान्त की स्थापना की। समाज में इतनी सारी विसंगतियाँ हैं कि उन्हें ठीक से समझे बिना और उनका निराकरण किये बिना किसी स्वस्थ समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मानव समाज सैकड़ों जातियों और उपजातियों में बंटा हुआ है जिसमें बेटी तो बेटी, रोटी तक का व्यवहार आपस में नहीं है। जन्मना जाति की अवधारणा अर्थात् जाति–पांति की परम्परा पूरे समाज को जकड़े हुए है। केवल जाति ही नहीं बल्कि विभिन्न मत–सम्प्रदायों, वर्गों एवं भाषाओं में बंटा हुआ समाज कैसे एक उन्नत एवं विकसित समाज कहा जा सकता है। वस्तुस्थिति यह है कि जन्मना जातिप्रथा को बनाये रखने में कई कथित धर्मगुरु भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः यह आवश्यक है कि सामाजिक उन्नति के मार्ग में बाधक जन्मना जातिवाद, साम्प्रदायिकता, जातीय आधार पर अत्याचार, नर–नारी विषमता आदि अनेक ऐसी कुरीतियाँ हैं जिनसे समाज की उन्नति अवरूद्ध हो चुकी है इनके विरुद्ध आर्य समाज आगे आये। सामाजिक उन्नति के लिए आर्य समाज पूरे विश्व में जाति आधारित अत्याचारों के विरुद्ध अभियान चलाकर जिन लोगों को समाज की उच्च जातियाँ, पिछड़ा या अछूत मानती हैं तथा उन्हें जनेऊ तक पहनने का अधिकार नहीं देती हैं उनके बीच जनेऊ पहनाओ अभियान चलाकर, गाँव की चौपाल में प्रवेश तथा बैठने या मंदिर में प्रवेश पाने की जिन्हें इजाजत नहीं दी जाती उन्हें आर्य समाज के कार्यकर्ता संगठित मोर्चे लगाकर सार्वजनिक रूप से कुंओं से पानी भरने तथा चौपाल में प्रवेश दिलाने का अभियान चलाये। आर्य समाज नारी तथा पुरुष को एक दूसरे के समान सहयोगी की तरह से देखता है और महर्षि दयानन्द ने भारतीय इतिहास में नारी की गरिमा की पुनर्स्थापना का अध्याय खोलकर ऐतिहासिक कार्य किया है। अतः नर–नारी समता के सिद्धान्त को आम जनता के मनःपटल पर स्थापित करने के लिए आर्य समाज विशेष अभियान चलाये। दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के विरुद्ध आर्य समाज अग्रणी भूमिका निभाये। इसी प्रकार नारी की गरिमा की सुरक्षा के लिए चलचित्रों व विज्ञापनों में नारी के अश्लील, भद्दे व अर्द्धनग्न विज्ञापनों एवं प्रदर्शन के विरुद्ध अभियान चलाये और समाजरूपी रथ के दोनों पहियों को स्वस्थ बनाकर तेज गति से दौड़ाने का कार्य करे। सामाजिक उन्नति में बाधक विशेष रूप से जातिवाद को कमजोर करने के लिए अन्तरजातीय विवाहों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जाये। खासकर आर्य समाज

अगले पृष्ठ पर जारी

पिता श्री धर्मजित जिज्ञासु जी को श्रद्धांजलि सुमन

– डॉ. देवबाला

पूज्यनीय पिताजी धर्मजित जिज्ञासु जी को श्रद्धांजलि सुमन अर्पित कर रहें आपके बच्चे। प्रभु हमें क्षमा करना आर्त हृदय से कुछ लिखने को जी चाह रहा है। हम उस पिता के बच्चे हैं जिन्होंने उस कांटे भरी दुनिया में अपनी सुगन्ध भारत में ही नहीं, पारवर्ती देशों तक फैला दी। वे एक विशाल वृक्ष थे जिसकी छाया में सैकड़ों आत्माओं ने आत्मिक शांति और आनन्द प्राप्त किया। पिता जी के पास दिव्य धन था – उनका नाम कुछ ऐसा था जिसकी चर्चा हर होठों पर होती रही। वहीं मीठा सा नाम है "धर्मजित जिज्ञासु" अपने आपमें वह एक संस्था थे। 21वीं शताब्दी के इस महान पिता का एक संदेश था – सदा मुस्कुराते रहो – अनहदनाद की पूजीं "ओ३म् का नाम जपते रहो।"

आखिरी दिनों में भी अपनी मूक वाणी से भी बहुत कुछ कह गये जिसने समझा वह पार हो गया उनकी संतान पर उनका बहुत बड़ा ऋण है जिससे अनृण होना मुश्किल तो है लेकिन असंभव नहीं। वे हमारे प्रेरणा स्रोत थे। उनके बताये हुए एक पथ पर चलना सिर्फ सुसंतान ही कर सकती है। उस माँ को धन्य है जिसने सब कुछ त्याग कर पिता जी का साथ दिया। माता–पिता को कोटि–कोटि नमन। दोनों सौम्यता के प्रतीक थे।

उस कर्मठ कार्यकर्ता, वंदनीय पिता को उनकी सुसंतान शत्–शत् नमन कर रही है।

वैदिक धर्म और संस्कृति

– डॉ. देवबाला

धर्म और संस्कृति के विषय में विद्वज्जन विचार–विमर्श करते रहे हैं और इस सम्बन्ध में विभिन्न धारणाएं प्रचलित हैं। उन धारणाओं पर प्रश्न भी उपस्थित होते हैं। एक प्रश्न यह है कि धर्म की आवश्यकता क्या है? क्या धर्म के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता? या उसका जीवन सुख पूर्वक नहीं बीत सकता? मान लीजिए, धरती पर हिन्दुइज्म, इस्लाम, क्रिश्चियनिटी, जुडाइज्म वगैरह मत, पन्थ न हों तो क्या मनुष्य का जीवन नहीं चलेगा? इतने सारे धर्म हैं इनमें कौन से ठीक हैं क्या सभी ठीक हैं? क्या सभी समान रूप से ठीक हैं या सभी ठीक हैं पर कोई एक ज्यादा ठीक है या एक ही ठीक है? या सब गलत हैं? या सभी थोड़ा–थोड़ा ठीक हैं और थोड़ा–थोड़ा गलत हैं? धार्मिक होने की पहचान क्या है? धर्म क्या किसी पहचान से बंधा हुआ है? यदि धर्म सुख पहुंचाने के लिये है तो धार्मिक समुदायों के लोग इतना लड़ते क्यों रहते हैं? धर्म के कारण इतना खून क्यों बहाया जाता है? धर्म का जो उद्देश्य बताया जाता है धर्म उसे पूरा करने में बुरी तरह असफल नहीं हुआ है।

आइये! इन प्रश्नों पर निष्पक्ष और तर्क पूर्वक विचार करते हैं। पहली बात धर्म की आवश्यकता क्या है? यह एक विचित्र प्रश्न है। हमारे जिन प्राचीन मनीषियों ने धर्म के विषय में बहुत सूक्ष्म तथा गहन चिन्तन किया, उन्होंने इस बात की तो परीक्षा की कि धर्म क्या है? धर्म का स्वरूप क्या है? किन्तु कहीं पर भी यह प्रश्न नहीं उठाया गया कि धर्म की आवश्यकता क्या है? किन्तु एक दूसरे ढंग से उत्तर मिल जाता है, भले ही यह प्रश्न न उठाया गया हो। उत्तर दिया है धर्म शब्द की व्याख्या में "धारणाद् धर्म इत्याहु" धर्म शब्द के अन्दर अर्थ है, जो धारण करे वह धर्म है, जिसने धारण किया हुआ है, जिसके होने से आधृत है। जिसके न होने से अस्तित्व का आधार ही समाप्त हो जायेगा, वह धर्म है। जिसका जो धर्म है उसको हटा देने से अस्तित्व ही नहीं रहेगा, तो जरा सोचिये, हिन्दुइज्म, इस्लाम, क्रिश्चियनिटी आदि को हटा देने से क्या मनुष्य समाज समाप्त हो जायेगा। स्पष्ट और निर्विवाद उत्तर है नहीं। तो फिर वह क्या है, जिसके न होने से मनुष्य समाज नहीं रहेगा या कहें कि मनुष्य, मनुष्य नहीं रहेगा। वह है मनुष्यता मानवता के वे नियम जिनको अपनाये बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं बनता और जिन नियमों को धारण किये बिना मनुष्य समाज भी नहीं रह सकता। वे नैतिकता के नियम कहे जाते हैं, उनको हटा दीजिए तो मनुष्य समाज भी समाप्त हो जायेगा। मनुष्यता या नैतिकता के जितने भी नियम हैं, उनको हटा दीजिए तो मनुष्य समाज भी समाप्त हो जायेगा।

मनुष्यता या नैतिकता के जितने भी नियम हैं वे इस्लाम, क्रिश्चियनिटी या हिन्दुइज्म के नहीं हैं, वे सबके हैं, इसलिए सभी धार्मिक समुदायों के धर्म ग्रन्थों में इन नियमों का उपदेश बिना किसी मतभेद के किया गया है तथा इन नियमों का पालन करने पर पूरा बल दिया गया है। जैसे झूठ न बोलना, चोरी न करना, दूसरों को अकारण दुःख न देना आदि। पाप और पुण्य की परिभाषा ही सब धर्मों में यही है। दूसरों को दुःख देना पाप है, सुख पहुंचाना पुण्य है। नैतिकता के जितने भी नियम हैं और हो सकते हैं उन सबका आधारभूत नियम एक ही है और वही वास्तविक धर्म है। धर्म को इतने सुन्दर, संतुलित ढंग से महर्षि वेदव्यास ने परिभाषित किया है कि उससे कोई भी व्यक्ति, चाहे किसी भी धार्मिक समुदाय का हो, असहमत नहीं हो सकता। महर्षि वेदव्यास कहते हैं :–

"श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवाव धार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।"

अर्थात् धर्म का सर्वस्व सुनो और सुनकर धारण करो, जैसा व्यवहार तुम अपने साथ किया जाना पसन्द नहीं करते, वैसा व्यवहार दूसरों के साथ मत करो। धर्म की यह परिभाषा सार्वकालिक है और कोई भी इसका विरोध नहीं कर सकता। इन नियमों को आप परिवार से व्यापार से, समाज से, सम्बन्धों से हटाकर देखिये तो आप पायेंगे कि सबकुछ बिखर गया कोई सम्बन्ध नहीं बचा। यही वह धर्म है, जिसने धारण किया हुआ है। इसलिए, हिन्दु, मुसलमान, ईसाई आदि सम्प्रदाय हैं, धर्म एक ही है, जिसका उपदेश प्राचीन वेदादि शास्त्रों ने किया है। इसलिए सभी धर्म ठीक हैं या गलत, यह प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि मूलतः धर्म एक ही है। धार्मिक सम्प्रदायों के कारण धरती पर युद्ध और अशांति है, धर्म के कारण नहीं। धर्म अपने उद्देश्य में इसलिए असफल हुआ है क्योंकि सम्प्रदायों ने धर्म की जगह ले ली और धर्म को अपदस्थ कर दिया।

वैदिक धर्म और संस्कृति के द्वारा ही मानवता का कल्याण सम्भव है। संस्कृति सभ्यता से भिन्न है। सभ्यता बदलती रहती है। खान–पान, रहन–सहन, पहनावा आदि सभ्यता के अन्तर्गत आते हैं, सभ्यता भारतीय, चाइनीज, जापानी, अमेरिकन हो सकती है, किन्तु संस्कृति अलग–अलग नहीं होगी। संस्कृति भी पूरी मनुष्यता की एक ही होगी "सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा" यह वेद का वाक्य है। सर्वप्रथम संस्कृति शब्द वेद में प्रयुक्त हुआ है। संस्कृति का अर्थ है, विद्या और सुशिक्षा से उपजा हुआ नीतियुक्त व्यवहार, यह संस्कृति ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। महर्षि दयानन्द का कथन है कि "मनुष्य उसी को कहना जो स्वात्मवत्" अपनी तरह ही दूसरों के दुःख सुख को अनुभव करे जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को दुःख दे, वह पशुओं का बड़ा भाई है। संस्कृति मनुष्य को मनुष्य बनायेगी, धर्म उसे ऊँचाइयाँ देगा, उदात्त स्तर तक ले जायेगा।

– पं. धर्मजित जिज्ञासु जी की सुपुत्री
निदेशक, द्रौपदी जिज्ञासु आश्रम, न्यूयार्क

पृष्ठ–6 का शेष

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति क्यों और कैसे?

के सदस्यों के लिए यह अनिवार्य करने का प्रयत्न किया जाये कि वे अपने पुत्र–पुत्रियों का विवाह गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अन्तरजातीय ही करें। अन्तरजातीय विवाह करने वालों को वार्षिकोत्सवों पर विशेष रूप से सम्मानित किया जाये और सामूहिक अन्तरजातीय विवाहों को बढ़ावा दिया जाये।

नशाखोरी के कारण समाज निरन्तर अवनति एवं पतन की ओर जा रहा है तथा समाज की उन्नति अवरूद्ध हो रही है। आर्य समाज नशीले पदार्थों एवं मादक द्रव्यों के खिलाफ निरन्तर अभियान चलाये। मांसाहार का प्रचलन आधुनिकता का पर्याय बनता जा रहा है। लोग पशुओं के चलते–फिरते कब्रिस्तान बनने में गौरवान्वित हैं। आर्य समाज को मांसाहार के विरुद्ध वैज्ञानिक एवं अर्थशास्त्रीय तर्कों के आधार पर प्रचार करना चाहिए। साथ ही गौहत्या एवं अन्य पशु–पक्षियों की हत्या के विरुद्ध भी वातावरण बनाना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में इसके मुख्य उद्देश्य को घोषित करते हुए जो वैश्विक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि पूरे विश्व में शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति के मार्ग में जो बाधाएँ हैं उन सभी के सम्बन्ध में आर्य समाज अपना दृष्टिकोण एवं घोषणा पत्र तैयार करके प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ करे। सम्भव है कि पूरे विश्व की ज्वलन्त समस्याएँ तुरन्त प्रभाव से समाप्त न हों किन्तु यदि आर्य समाज इन समस्याओं के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करके इनके समाधान प्रस्तुत कर सकेगा तो यह भी एक ऐतिहासिक भूमिका आने वाले समय में आर्य समाज की मानी जायेगी। पूरे विश्व में इस समय जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण सुरक्षा, प्रदूषण, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूट, अफ्रीकी रंगभेद की नीति, खतरनाक परमाणु हथियारों का निर्माण, आतंकवाद आदि समस्याएँ पूरी मानवता के लिए खतरा बनी हुई हैं। ऐसे में संसार का उपकार करने का दायित्व अपने कंधों पर लेकर कार्य करने वाले आर्य समाज को न केवल इन समस्याओं के समाधान का उपाय खोजना होगा बल्कि पूरी मानवता के समक्ष नयी आशा का संचार करना होगा।

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड,
नई दिल्ली–110002

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 8–9 सितम्बर, 2017
प्रकाशन की तिथि : 7 सितम्बर, 2017
वैदिक सार्वदेशिक
7 से 13 सितम्बर, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के 27वें आर्य महासम्मेलन की चित्रमय झलकियाँ

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

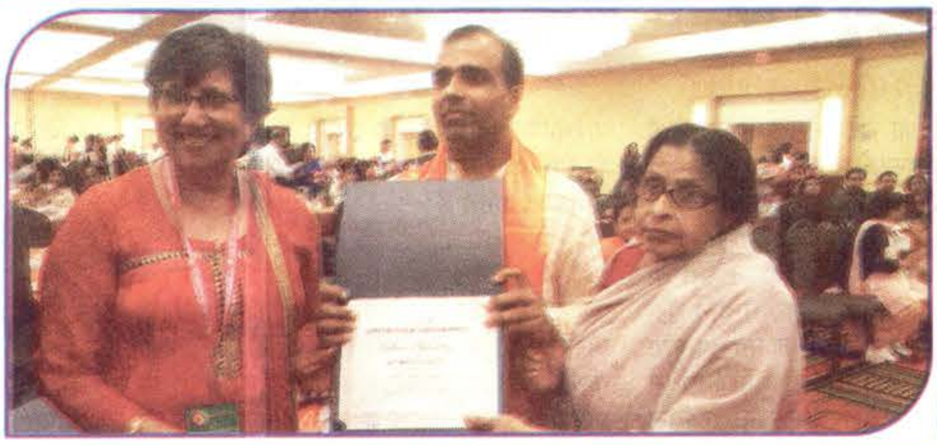

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।